दैनिक जागरण

शिक्षा में किया निवेश सर्वाधिक लाभप्रद होता है

पाकिस्तान का पुराना ढोंग

यह मजाक नहीं-भद्दा मजाक है कि पाकिस्तान एक बार फिर इस आशय की खबरें पेश कर रहा है कि उसने जैश ए मुहम्मद के सरगना मसूद अजहर के भाई समेत करीब 44 आतंकियों की गिरफ्तारी की है। यह भारत के साथ विश्व समुदाय की आंखों में धूल झोंकने की एक और कोशिश के अलावा कुछ नहीं। यह अच्छा हुआ कि भारत ने पाकिस्तान की इस दिखावटी कार्रवाई को महत्व नहीं दिया, लेकिन बेहतर होगा कि वह विश्व समुदाय को इससे अवगत कराए कि पाकिस्तान किस तरह आतंकी संगठनों पर पाबंदी लगाने और आतंकियों को गिरफ्तार करने का ढोंग करता है। इस ढोंग को उजागर करने के साथ ही यह भी आवश्यक है कि भारत सरकार आतंकियों के खिलाफ पाकिस्तान की फर्जी कार्रवाइयों का सारा कच्चा-चिट्ठा फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स को सौंपे। पाकिस्तान को यह पता चलना ही चाहिए कि वह छल-कपट का खेल और लंबे समय तक जारी नहीं रख सकता। अगर उसे आतंकियों को बार-बार गिरफ्तार करने की जरूरत पड़ती है तो इसका मतलब यही है कि वह उन पर शिकंजा कसने का नाटक करता है। वह उनके खिलाफ अदालती कार्रवाई का भी खूब नाटक करता है। आखिर यह किससे छिपा है कि मुंबई हमले के गुनहगार तो अभी तक छुट्टा घूम रहे हैं, लेकिन अमेरिका को ओसामा बिन लादेन का सुराग देने वाले को न जाने कब सजा सुना दी गई? इससे यही पता चलता है कि पाकिस्तान की सेना और उसकी खुफिया एजेंसी के साथ उसकी अदालतें भी आतंकियों पर मेहरबान हैं।

पाकिस्तान ने भारतीय संसद पर हमले के बाद जैश ए मुहम्मद पर पाबंदी लगाई थी, लेकिन यह दुनिया को झांसा देने के लिए थी। इस तथाकथित पाबंदी का जैश ए मुहम्मद पर कोई असर नहीं पड़ा। उसके आतंकी शिविर और जिहादी तैयार करने वाले मदरसे बदस्तूर जारी रहे। उनका संचालन करने में उसे पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी की मदद अलग से मिली। पाकिस्तान ने ऐसी ही नौटंकी मुंबई हमले के बाद लश्करे तैयबा पर पाबंदी लगाने के नाम पर की थी। मुंबई हमले के बाद जैश और लश्कर के जो आतंकी गिरफ्तार किए गए उन्हें चंद हफ्तों बाद ही छोड़ दिया गया। उनके दफ्तरों पर लगी पाबंदी भी जल्द ही बेअसर हो गई और बाद में लश्करे तैयबा को नाम बदलकर सक्रिय होने की छूट दी गई। आतंकी सरगना हाफिज सईद को नजरबंद करने के नाम पर भी पाकिस्तान कई बार तमाशा कर चुका है। यह भी किसी से छिपा नहीं कि पठानकोट एयरबेस पर हमले के बाद किस तरह जैश सरगना मसूद अजहर को हिरासत में लेने का बहाना बनाया गया था। भारत को पाकिस्तान की इस तरह की फर्जी कार्रवाई को कोई अहमियत देने के बजाय वांछित आतंकी सरगनाओं को खुद के हवाले करने की मांग करनी चाहिए। भारत को जैश सरगना को खुद के हवाले करने की मांग इसलिए और भी जोर से करनी चाहिए, क्योंकि उसे भारतीय विमान के अपहरण के एवज में छोड़ा गया था। यह पाकिस्तान का छल ही है कि ऐसे खूंखार आतंकी को वह बीमार बताकर कर्तव्य की इतिश्री कर रहा है। साफ है कि नया पाकिस्तान तो पुराने से भी बदतर है।

विकास का संदेश

बिहार की राजधानी पटना में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की संकल्प रैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक स्वर में सत्ता का विकल्प विकास बताया। दोनों दिग्गज विपक्ष पर हमलावर दिखे, लेकिन विकास कार्यों को गिनाने से नहीं चूके। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में देश की जनता को विकास कार्यों के आधार पर 21वीं सदी का भारत दिखाया। बीते पांच साल में किए गए कार्यों को केंद्र की राजग सरकार की मजबूत नींव करार दिया। पीएम मोदी ने शुरुआत पटना से की और 1200 करोड़ की लागत से पटना एयरपोर्ट के विस्तार एवं आधुनिकीकरण की परियोजना को सरकार की नींव का एक पत्थर बताया। घरों में गैस पाइपलाइन से आपूर्ति को बड़ी उपलब्धि बताया। प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना में बिहार में 1.5 करोड़ किसानों को लाभ की बात की और प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में गरीबों का पांच लाख का मुफ्त इलाज को बड़ी उपलब्धि के तौर पेश किया। मध्यम वर्ग को राहत गिनाना भी पीएम नहीं भूले। उन्होंने तीन करोड़ लोगों को इनकम टैक्स के दायरे से बाहर करने, 1.5 करोड़ गरीबों को पक्का मकान मुहैया कराने और समान वर्ग के गरीबों को 10 प्रतिशत आरक्षण देने जैसी दूरगामी परिणाम देने वाले फैसले गिनाए। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आधारभूत संरचना क्षेत्र से जुड़े विकास में केंद्र के पर्याप्त सहयोग की प्रशंसा की। सत्ता और विपक्ष सरकार के दो पहलू हैं। निश्चित तौर पर जो दल सत्ता में होता वह विपक्ष और विपक्ष सदैव सत्ता पक्ष की खामियों को गिनाता है। आम जन को दलों के एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप से ज्यादा उनके लिए होने वाले विकास कार्यों से मतलब रहता है। रैली चाहे सत्ताधारी दल की हो या विपक्ष की, एक-दूसरे को कोसने के साथ विकास के रोडमैप का बुलंद आवाज में जिक्र होना चाहिए। जनता को रोजगारपरक शिक्षा, सस्ता इलाज, मजबूत आधारभूत संरचना, महंगाई पर लगाम, कानून-व्यवस्था का राज इसी से वास्ता रहता है।

समस्या की जड़ है पाकिस्तानी सेना

ब्रह्मा चेलानी

विश्व समुदाय इस पर एकमत है कि पाकिस्तान अपने आतंकी ढांचे को जड़ से खत्म करे, फिर भी इसकी संभावना कम ही है कि उसकी सेना अपने आतंकी पिट्ठुओं पर कोई कार्रवाई करेगी

भारत के साथ पाकिस्तान की मौजूदा तनातनी बड़े नाजुक वक्त में हुई है। फिलहाल पाकिस्तान अपने तीन पड़ोसियों भारत, ईरान और अफगानिस्तान से उलझा हुआ है। तीनों देशों ने अपनी जमीन पर हुए हालिया आतंकी हमलों के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार बताया है। एक ही वक्त में बढ़ता क्षेत्रीय तनाव और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अफगान तालिबान के साथ 'शांति समझौते' का प्रयास एक दूसरे का पूरक ही मालूम पड़ता है। पुलवामा हमले से ठीक पहले ईरान के एलीट रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के दस्ते पर हुए हमले में 27 सुरक्षाकर्मियों की जान गई थी। ऐसे ही तालिबान के एक हमले में 32 अफगानी सुरक्षाकर्मियों की मौत हो गई। पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद की धुरी बना हुआ है। दुनियाभर में हुए प्रमुख आतंकी हमलों के तार कहीं न कहीं पाकिस्तान से ही जुड़े हुए हैं। वर्ष 2005 में लंदन बम धमाके, 2008 का मुंबई हमला या 2015 में कैलिफोर्निया में हुई हत्याएं इसकी मिसाल हैं। अमेरिका पर 9-11 के आतंकी हमले के प्रमुख सूत्रधार ओसामा बिन लादेन के अलावा अलकायदा के कई प्रमुख आतंकियों को भी पाकिस्तान में ही आश्रय मिला था। पाकिस्तानी आतंकवाद का सबसे बड़ा खामियाजा उसके पड़ोसी देशों को भुगतना पड़ता है। 1971 में पाकिस्तान से अलग होकर स्वतंत्र राष्ट्र बने बांग्लादेश ने भी अपने देश में अभी तक के सबसे जघन्य आतंकी हमले का दोषी पाकिस्तान की कुख्यात खुफिया एजेंसी आइएसआइ को माना है।

औपनिवेशिक दौर की समाप्ति के बाद पहले इस्लामिक देश के रूप में स्थापित हुए पाकिस्तान का अतीत सत्तर वर्षों में खतरनाक ही रहा है। आगे भी उसका भविष्य अनिश्चित ही दिखता है। वहां कायम जिहादी संस्कृति ने अलगाववाद को बढ़ावा देने के साथ ही उसे गंभीर वित्तीय संकट में धकेल दिया है। इसके चलते पाकिस्तान चीन और सऊदी अरब जैसे अपने रहनुमाओं का मोहताज बनकर रह गया है। सेना और आतंकी समूहों की लंबे समय से चली आ रही साठगांठ ने पाकिस्तान की समस्याओं को कई गुना बढ़ा दिया है। पाकिस्तान में संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधित 22 आतंकी समूह सक्रिय हैं। पाक सेना उन्हें अपनी सुविधा के मुताबिक इस्तेमाल करती है। पाकिस्तान के जिहादी समूह मुख्य रूप से दो सैन्य तानाशाहों जनरल जिया उल हक और जनरल परवेज मुशर्रफ के शासन में पनपे। सैन्य-असैन्य प्रतिष्ठान के असहज संबंध पाकिस्तान की नाकामी एक बड़ी वजह हैं। पाकिस्तानी सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आइएसआइ इतनी ताकतवर हैं कि वे नागरिक सत्ता की निगरानी के दायरे में नहीं हैं। इससे वे मनमाने ढंग से दखल देती हैं। चुनी हुई सरकार होने के बावजूद निर्णायक शक्ति जनरलों के पास है। इससे उन्हें आतंकी समूहों से रिश्ते कायम रखने का अधिकार मिल जाता है।

मौजूदा क्षेत्रीय तनाव ने पाकिस्तानी सेना पर दबाव बढ़ा दिया है कि वह अपने आतंकी ढांचे को नष्ट करे। अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोंपियो ने भी इसकी जरूरत बताई है। यूरोपीय संघ और अन्य शक्तियों द्वारा भी पाकिस्तान को यही हिदायत दी जा रही है। अंतरराष्ट्रीय बिरादरी इस पर एकमत है कि पाकिस्तान को अपने आतंकी ढांचे को जड़ से समाप्त करना चाहिए। इसके बावजूद इसकी संभावना कम ही है कि पाकिस्तानी सेना अपने आतंकी पिट्ठुओं पर कोई कार्रवाई करेगी। भारत के खिलाफ अघोषित युद्ध में पाकिस्तानी सेना द्वारा आतंकियों का इस्तेमाल किफायती और उपयोगी विकल्प है। भारत के खिलाफ पाकिस्तानी सेना को चीन का तो ईरान के खिलाफ सऊदी अरब का संरक्षण मिला है जबकि अफगानिस्तान में उसे अपने ही बनाए तालिबान का साथ मिला हुआ है।

अवधेश राजपूत

पुलवामा आतंकी हमले के साथ ही भारत का धैर्य जवाब दे गया और उसने पाकिस्तान में आतंकियों के ठिकानों पर हवाई हमले किए। दुनिया में पहली बार ऐसा हुआ कि किसी परमाणु शक्ति संपन्न देश ने परमाणु हथियार रखने वाले किसी देश के भीतर घुसकर ऐसी कार्रवाई को अंजाम दिया। परमाणु हथियारों की पाकिस्तानी जनरलों की धौंस को धता बताते हुए भारत ने पाकिस्तान के बहुत भीतर तक लड़ाकू विमान भेजकर अचूकता के साथ आतंकियों को निशाना बनाया। इससे पाकिस्तान की हुई फजीहत में चेहरा बचाने की कवायद के तहत फौजी हुक्मरानों ने अगले दिन ही भारत पर जवाबी हवाई हमले की कोशिश की जिसमें दोनों पक्षों के एक-एक लड़ाकू विमान भेंट चढ़ गए। यह सिलसिला तभी खत्म होगा जब पाकिस्तान जिहादी आतंकी समूहों को ध्वस्त करेगा। भारत का धैर्य अब चुकता जा रहा है और भविष्य में वह और बड़ी कार्रवाई कर सकता है। पाकिस्तान के इतने भीतर तक लड़ाकू विमान भेजकर भारत ने एक बड़ी लकीर खींच दी है। उसने संकेत दे दिया है कि अगर जरूरी हुआ तो तनाव बढ़ने पर भारत और बड़ा जवाब दे सकता है।

वास्तव में अफगानिस्तान से अमेरिका की विदाई के फैसले के केंद्र में भी पाकिस्तान ही है जो न केवल तालिबान, बल्कि हक्कानी नेटवर्क को भी पोषित करता आया है जिसने अमेरिकी सुरक्षा बलों और नागरिकों पर हमले किए हैं। अमेरिका के एक शीर्ष सैन्य कमांडर ने 2017 में माना था, 'ऐसी लड़ाई में जीतना बेहद मुश्किल है जब आपके दुश्मन को बाहरी मदद और सुरक्षित पनाह उपलब्ध हो।' ट्रंप प्रशासन द्वारा तालिबान के साथ हो रहा समझौता पाकिस्तानी जनरलों के मनमाफिक कदम है। उनका हमेशा यही लक्ष्य रहा है कि काबुल में पाकिस्तानपरस्त सरकार रहे, लेकिन अमेरिका द्वारा तालिबान को सत्ता से उखाड़ फेंकने के बाद से उनके समीकरण बदल गए थे, लेकिन अब उन्हें फिर से अपने अरमान पूरे होने की उम्मीद बंधी है। अमेरिकी वार्ताकार फिलहाल तालिबान के साथ संभावित समझौते को आकार देने में जुटे हैं। अमेरिकी रियायतों ने पाकिस्तानी जनरलों और तालिबान का हौसला बढ़ाना शुरू कर दिया है।

यह कोई दुर्योग नहीं कि अमेरिका-तालिबान के बीच संभावित समझौता सार्वजनिक होने के तुरंत बाद ही भारतीय और ईरानी सुरक्षा बलों को निशाना बनाया गया। शायद पाकिस्तानी जनरलों ने यह आकलन किया हो कि अभी अमेरिका तालिबान के साथ करार को अंतिम रूप देने में लगा है तो उन्हें भारतीय सुरक्षा बलों पर हमला करने की कोई भारी कीमत नहीं चुकानी पड़ेगी। भारतीय उपमहाद्वीप में कायम यह संकट तब तक सुलझने के आसार नहीं जब तक पाकिस्तानी सेना अपने पोषित आतंकवाद पर विराम नहीं लगाती जिससे उसके पड़ोसी देश दशकों से पीड़ित हैं। सैन्य-असैन्य संबंधों को सहज बनाए बिना वहां आतंक के उद्भव को नहीं रोका जा सकता। नागरिक नियंत्रण के बिना सेना बेलगाम होकर आतंक फैलाती रहेगी। हालांकि पाकिस्तान को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। वह अमेरिकी मदद से पहले ही हाथ धो चुका है। फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स ने भी उसे ग्रे लिस्ट में डाल दिया है। इससे चीन और सऊदी अरब पर पाकिस्तान की निर्भरता और बढ़ गई है। पुलवामा हमले पर भारत की जवाबी कार्रवाई इस सामरिक उद्देश्य के साथ की गई कि अब पाकिस्तानी जनरल आतंक पर निर्णायक प्रहार करें। भारत इस लक्ष्य से भटकना बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर भारत के कदम लड़खड़ाएंगे तो पाकिस्तानी जनरलों का हौसला बढ़ेगा ही।

(लेखक सामरिक मामलों के विशेषज्ञ हैं)

response@jagran.com

कश्मीर में युद्ध सरीखा छद्म-युद्ध

राजीव सचान

युद्ध से बचने की चिंता करनी है तो कश्मीर में जारी छद्म युद्ध की अनदेखी करना छोड़ना होगा

बालाकोट में भारतीय वायुसेना की साहसिक और पाकिस्तान के साथ दुनिया को हैरान कर देने वाली कार्रवाई के बाद जब खिसियाई पाकिस्तानी वायुसेना ने भारत पर पलटवार किया तब सोशल मीडिया में इस तरह की मांग जोर-शोर से छिड़ी कि जंग के लिए न कहें- से नो टू वार। जंग से बचने की मांग करने में कुछ भी गलत नहीं। जंग से मसले हल होने की गारंटी नहीं, लेकिन इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कभी-कभी ऐसे हालात भी बन जाते हैं जब जंग से बचना मुश्किल हो जाता है। शायद 1971 में ऐसा ही हुआ था। इस सबके बावजूद जंग से बचने की हर संभव कोशिश होनी चाहिए-इसलिए और भी, क्योंकि भारत और पाकिस्तान के बीच जंग छिड़ने की स्थिति में उसके बेलगाम हो जाने का खतरा है। इस खतरे की अनदेखी करना ठीक नहीं, लेकिन क्या हम इसकी अनदेखी कर दें कि कश्मीर में एक जंग पहले से जारी है। देश के इस हिस्से में पाकिस्तान पोषित और प्रायोजित आतंकवाद को छद्म युद्ध की संज्ञा दी जाती है, लेकिन छद्म युद्ध का यह मतलब नहीं कि यह युद्ध के मुकाबले कम गंभीर है। इसकी गंभीरता को इससे समझा जा सकता है कि पुलवामा में भीषण आतंकी हमले में 40 सीआरपीएफ जवानों की शहादत के बाद से कम से कम एक दर्जन जवान आतंकियों से लोहा लेते हुए अपना बलिदान दे चुके हैं। पुलवामा हमले में शामिल रहे आतंकी के साथियों को मार गिराने में पुलवामा में ही मेजर विभूति कुमार ढौंडियाल समेत पांच जवान खेत रहे। उनकी शहादत का समाचार तब आया जब उनके गृहराज्य उत्तराखंड में शहीद मेजर चित्रेश बिष्ट के अंतिम संस्कार की तैयारी हो रही थी। चित्रेश भी कश्मीर में शहीद हुए थे। इसके चंद दिनों बाद हंदवाड़ा में सीआरपीएफ के एक इंस्पेक्टर समेत पांच जवानों को बलिदान देना पड़ा।

कश्मीर में 1989-90 से ही पाकिस्तान की ओर से थोपा गया भीषण छद्म युद्ध जारी है। छिपकर और छल से लड़ा जाने वाला यह छद्म युद्ध भारत के लिए कितना महंगा और एक तरह से युद्ध सरीखा साबित हो रहा, इसे इससे समझा जा सकता है कि बीते तीस सालों यानी 1989 से लेकर 24 फरवरी 2019 तक कश्मीर में सेना, अर्द्धसैनिक सुरक्षा बलों और जम्मू-कश्मीर पुलिस के छह हजार से अधिक जवानों को बलिदान देना पड़ा है। ये सब जवान आतंकी हिंसा का शिकार हुए हैं। यह एक बड़ी संख्या है। इतनी बड़ी संख्या में जवानों की शहादत तो यही कहती है कि कश्मीर में युद्ध जैसे हालात कायम हैं। क्या इस छद्म युद्ध के लिए ऐसा कुछ अभियान चला-से नो टू प्रॉक्सी वार? आखिर युद्ध की चिंता में कश्मीर में तबाही मचा रहे छद्म युद्ध को ओझल कर देना

कहां तक उचित है? पाकिस्तान कश्मीर में यह छद्म युद्ध इसीलिए छेड़े हुए है, क्योंकि वह आमने-सामने की लड़ाई में भारत के सामने टिक नहीं कह सकता। यह छद्म युद्ध उसे सस्ता पड़ रहा है, क्योंकि इसके लिए उसे जो उन्मादी जिहादी चाहिए वे पाकिस्तान में बहुतायत से उपलब्ध हैं। जैश और लश्कर सरीखे आतंकी संगठन केवल पाकिस्तानी सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आइएसआइ के संरक्षण में आतंकियों के प्रशिक्षण शिविर ही नहीं, बल्कि ऐसे मदरसे भी चलाते हैं जहां से भविष्य के लिए आतंकी हासिल किए जा सकें।

पाकिस्तान को आतंकियों-जेहादियों की भारत में घुसपैठ भर करानी पड़ती है। इन पाकिस्तान पोषित और प्रशिक्षित आतंकियों की घुसपैठ के लिए ही सीमा पर गोलाबारी होती है। जब भारत की ओर से इस गोलाबारी का जवाब दिया जाता है तो सीमांत इलाके युद्ध जैसे हालत से दो-चार होते दिखते हैं। इस दौरान सीमांत इलाकों में रहने वालों के लिए बेहिसाब मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। उनके घर-बार नष्ट हो जाते हैं। उनके मवेशी मारे जाते हैं और कभी-कभी तो लोगों को भी पाकिस्तान की ओर से होने वाली गोलाबारी का शिकार होना पड़ता है। इस गोलाबारी में होने वाली जन-धन की हानि का तो शायद कभी अंदाजा भी नहीं लगाया गया। सीमा पर तनाव की स्थिति में सीमांत क्षेत्र के लोगों को अक्सर ही सुरक्षित स्थानों में ले जाना पड़ता है। इसी कारण जम्मू और कश्मीर के सीमांत इलाकों में बंकर बनाने का काम जारी ही रहता है। अकेले पुंछ और राजौरी के सीमांत इलाकों में दो-दो सौ और बंकर बनाने की तैयारी हो रही है।

समझना कठिन है कि कश्मीर में ऐसे विकट हालात के बाद भी ऐसी कोई योजना क्यों नहीं बनी ताकि पाकिस्तान से लगती सीमा पर रह रहे लोगों को स्थाई रूप से सीमा से दूर बसाया जा सके। ऐसी कोई योजना इसलिए बननी चाहिए, क्योंकि कभी-कभार हजारों लोगों को उनके घरों से निकालकर सुरक्षित इलाकों में ले जाना पड़ता है। आखिर यह स्थिति युद्ध के हालात से अलग कैसे है? जैसे जम्मू और कश्मीर के सीमांत इलाकों के लोगों को सीमा से दूर सुरक्षित इलाकों में बसाने की कोई योजना नहीं बनाई जा सकी वैसे ही पाकिस्तान से लगती सीमा को वास्तव में अभेद्य भी नहीं बनाया जा सका। सीमाओं के अभेद्य न होने के कारण ही आतंकियों को भारत में घुसपैठ करने में आसानी होती है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि पाकिस्तान प्रायोजित छद्म युद्ध से ढंग से निपटने के बारे में कभी सोचा ही नहीं गया। कम से कम अब तो बिना किसी देरी के सोचा ही जाना चाहिए, क्योंकि हम अपने जवानों के बलिदान का सिलसिला इसी तरह कायम रहते हुए नहीं देख सकते।

यदि तत्काल धारा 370 के बारे में पुनर्विचार नहीं हो सकता तो कम से कम जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती इलाके की आबादी को तो वहां से हटाने का काम किया ही जा सकता है। केवल इतना ही पर्याप्त नहीं होगा। इसी के साथ पाकिस्तान से लगती सीमा से कम से कम चार-छह किलोमीटर इलाके को केंद्र शासित क्षेत्र का दर्जा देकर ऐसी व्यवस्था करनी होगी ताकि सीमा पार से आतंकियों की घुसपैठ सचमुच मुश्किल हो जाए। वे घुस भी आएं तो उन्हें सीमांत इलाकों में छिपने-शरण लेने की कोई जगह न मिले। सीमांत इलाके को केंद्र शासित प्रदेश घोषित करने के बाद अगला कदम कश्मीर में आबादी के असंतुलन को दूर करने का होना चाहिए। कश्मीर केवल किसी एक समुदाय का नहीं है और न हो सकता है। हमारे नीति-नियंताओं को यह समझना ही होगा कि जितनी जरूरत पाकिस्तान के खिलाफ कुछ ठोस कदम उठाने की है उतनी ही कश्मीर में भी हालात सुधारने के लिए भी कुछ करने की है और वहां के हालात तब सुधरेंगे जब उन कश्मीरियों का मुगालता दूर होगा जो जोर-जबरदस्ती या फिर पाकिस्तान की मदद से आजादी हासिल कर सकते हैं। यह समझा जाना चाहिए कि जब तक पाकिस्तान कश्मीर में दखल देने की स्थिति में रहेगा वह भारत को चैन नहीं लेने देगा।

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडीटर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

सफलता

मानव समाज में कुछ चीजें ऐसी भी विकसित होती चली गईं जिनका कोई प्रयोजन नहीं था। जैसे प्रकाश एक सत्य है, किंतु इसके सापेक्ष अंधकार गढ़ लिया गया। प्रकाश हो सकता है या नहीं हो सकता है। ऐसा नहीं है कि अंधकार प्रकाश का स्थान ले लेगा। इसी तरह सफलता एक स्थिति है। इसके सापेक्ष असफलता को गढ़ लिया गया। असफलता कोई स्थिति नहीं है। मनुष्य जब कोई उद्देश्य तय करता है तो उसके लिए प्रयास करता है। जब प्रयास पर्याप्त होते हैं और परिस्थितियां अनुकूल होती हैं तो उद्देश्य प्राप्त हो जाता है। प्रयास में कोई कमी अथवा परिस्थितियों के कारण कई बार उद्देश्य प्राप्त नहीं हो पाता। इसे असफलता कहना एक तरह से पराजय की घोषणा है। जीवन में कभी भी कोई हारना नहीं चाहता। इससे जहां मनोबल गिरता है वहीं मनुष्य अपने उद्देश्य के प्रति रुचि गंवा बैठता है। मनुष्य जीवन में जब भी आगे कदम बढ़ाता है तो अपनी योग्यता और क्षमता को पहले से समृद्ध करता है। इससे वह उद्देश्य के कितना निकट पहुंचा, यह भिन्न विषय है, किंतु उसकी श्रेष्ठता में वृद्धि होती है। यह स्वयं में बड़ी सफलता है। मनुष्य जब भी निष्ठा, भावना और सदिच्छा से कोई कर्म करता है तो वह आगे बढ़ता है। उसके जीवन में गुणात्मक परिवर्तन होते हैं। गुणों को धारण करना और कर्मशील होना मन को सुख और संतोष देता है। संसार में बहुत से लोग हुए जिन्होंने सद्मार्ग पर जीवन जिया और सत कर्म किए। इससे वे स्वयं भी सुखी रहे और पूरा समाज लाभान्वित हुआ। इसमें उनका कोई निज प्राप्ति का उद्देश्य निहित नहीं था, क्योंकि गुणों और कर्मों को उन्होंने जीवन का स्वाभाविक अंग बना लिया।

आज जब संसार में प्रतिस्पर्धा और भौतिकता चरम पर है, आगे बढ़ने के अर्थ और सुख को समझना होगा। गुणों और सत्कर्मों की दिशा में एक कदम भी चलना सफलता है। इसमें जब आनंद आने लगे तो उद्देश्य की प्राप्ति भी सहज हो जाती है। जब ऐसा नहीं होता तो मन में सदैव असफलता का भय बना रहता है। यह संकल्प को निर्बलता की ओर धकेलता है। असफलता वास्तव में निराशा पैदा करने वाली छाया है। इसे संकल्प के प्रकाश से ही विलुप्त किया जा सकता है। जब मात्र सफलता के बारे में सोचेंगे, तभी सफलता प्राप्त होगी।

डॉ. सत्येंद्र पाल सिंह

एक जरूरी सबक

फिर से

पड़ोसी चाहे मुल्क हो या घर के बाजू में रहने वाला या कक्षा में साथ बैठने वाला या फिर कहीं और, अक्सर यह आपके बस में नहीं होता कि वह कौन होगा

कक्षा छह में मेरा सहपाठी राजू मेरा पड़ोसी बना क्लास में। वह तरह-तरह की आवाजें निकालता और सामने बैठे लड़कों की पीठ पर मेरे पेन से स्याही छिड़क देता। हरी स्याही का पेन सिर्फ मेरे पास था तो वे लड़के समझते कि मैंने छिड़की है। शिकायत होती और राजू की गलती पर पिटता मैं। बाद में राजू अकेले में हो, हो करके हंसता। मैंने कई बार उससे कहा कि अबकी बार तो ठीक है, मगर आगे से करोगे तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा, पर वह नहीं मानता। वह भलीभांति जानता था कि गरजने वाले बादल बरसा नहीं करते।

एक बार परेशान होकर मैंने मास्साब से यह कहते हुए अपनी सीट बदलने को कहा कि राजू बहुत परेशान करता है। मास्साब ने आव देखा न ताव, मेरी ही पिटाई कर दी कि एक तो बदमाशी खुद करते हो और शिकायत उस बेचारे राजू की। आगे से राजू को परेशान करने की शिकायत न मिले, वरना तुम्हारे घर खबर भेजूंगा।

कुछ समझ में ही न आ रहा था कि मामला कैसे सुलझाया जाए। तब हमारे मोहल्ले में हमारे पड़ोस में एक विपिन भईया रहते थे। थे तो हमसे 5 साल बड़े, मगर कद-काठी से लहीम-सहीम थे। किसी पर भी जब अत्याचार की अति हो जाती है तो हिम्मत एकाएक न जाने कहां से आ जाती है। एक शाम उनको अपनी व्यथा बताई इस वादे के साथ कि वह मेरे घर में किसी को इस बारे में नहीं बताएंगे। अगले दिन शाम को वह स्कूल के बाहर ही खड़े थे। मैं और राजू स्कूल से निकले तो उन्होंने आगे बढ़कर राजू की कॉलर पकड़ी और पांच-छह तमाचे जड़ दिए। भईया ने उसे धमकाते हुए कहा कि अगर आज के बाद इसे परेशान करने की तेरी शिकायत मिली तो फिर आकर तुझे इससे भी ज्यादा मारूंगा। वह दिन था और फिर 11वीं कक्षा तक, राजू क्लास में मेरा पड़ोसी रहा, मगर ऐसा खौफ में आया कि हमेशा मेरी जी हुजूरी ही करता रहा। बाद में फिर न कभी राजू मिला और न ही विपिन भईया, मगर इस प्रसंग से जीवन की कुछ सीखें जरूर मिल गईं।

पड़ोसी चाहे मुल्क हो या घर के बाजू में रहने वाला या कक्षा में साथ बैठने वाला या फिर कहीं और, अक्सर यह आपके बस में नहीं होता कि वह कौन होगा। अगर पड़ोसी अच्छा है तो इस बात को अपना सौभाग्य मानें। यह सबके नसीब में नहीं होता। अगर अच्छा नहीं है तो भी आपको उसके साथ निभाना ही होगा, चाहे जैसे भी, वरना जीना दूभर हो जाएगा। पड़ोसी से जितना डरोगे वह उतना ही डराएगा। जितने अत्याचार सहोगे वह उतने ही अत्याचार करेगा। बार-बार मात्र गीदड़ भभकियां मत दो। अगर वह सौहार्दपूर्ण तरीके से रहने की बात नहीं मानता तो एक बार हिम्मत जुटाकर उसके अंदर इस बात का खौफ पैदा कर दो कि अगर वह अत्याचार करेगा तो उसे सजा मिलेगी। इस बात का जरूर खयाल रखो कि जिसे सजा दे रहे हो, उसे वाकई सजा मिली है। इसके साथ ही हमेशा दर्शाते रहो कि तुम आज भी उतने ही ताकतवर हो जितना उस वक्त सजा देते समय थे।

बस इतना ही तो करना है, फिर देखो पड़ोसी कैसे भईया जी, भईया जी कहते हुए आगे-पीछे घूमेगा। राजू आखिर घूमा ही मेरे पीछे।

(साभार : उड़न तश्तरी ब्लॉग में समीर लाल 'समीर')

राष्ट्र-तीर्थ के रूप में स्थापित युद्ध स्मारक

उप राष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने 'देश के अनाम प्रहरियों को नमन' लेख के माध्यम से राष्ट्र के बलिदानी सैनिकों के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मोदी सरकार द्वारा निर्मित जिस युद्ध स्मारक की चर्चा की है, वह भविष्य में ऐसा 'राष्ट्र-तीर्थ' बनेगा जिसे देखकर भारत-प्रेमी गर्व की अनुभूति कर सकेंगे। आज भारत सुरक्षित है तो इसके मूल में देश के अंदर और बाहर दुश्मनों का सामना करने वाले अनाम वीर सैनिकों का बलिदान है, जिसे आज हम इस युद्ध स्मारक पर उत्कीर्ण उन बलिदानियों की अमर कीर्ति पढ़कर महसूस कर पा रहे हैं। वीर सैनिक देश की सुरक्षा में सन्नद्ध रहते हुए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने से नहीं चूकते, इनका यह बलिदान इन्हें अमर बना देता है। भारत के वीर सैनिकों की शहादत को जीवंत रखने के उद्देश्य से 1962 के भारत-चीन युद्ध सहित 1947 से 1999 तक पाकिस्तान द्वारा थोपे गए चार युद्धों में शहीद होने वाले 25 हजार से अधिक वीर सैनिकों का विवरण इस राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में उपलब्ध है। वर्तमान भारत सरकार का यह सुकृत्य देश के अनाम वीर सैनिकों को पहचान देने वाली श्रद्धांजलि जैसा है, लेकिन इसके साथ-साथ भारत सरकार को देश के लिए शहादत देने वाले वीर सैनिकों के परिवारीजनों का भी विशेष रूप से खयाल रखने की भी जरूरत है। शहीद वीर सैनिकों के परिवार को विशिष्ट श्रेणी का परिवार मानकर उनको विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराना केंद्र सरकार की जिम्मेदारी बननी चाहिए। यद्यपि मोदी सरकार इस मामले में संवेदनशील है। भारतीय सेना की आवश्यकताओं को पूर्ति के साथ-साथ शहीद सैनिकों के परिवार की चिंता करना मोदी सरकार की प्राथमिकता में है। बावजूद इसके भारतीय सेना और उनके शहीद परिवारीजनों की आवश्यक सुविधाओं के लिए स्थायी रूप से विशिष्ट प्रावधान होना चाहिए ताकि सरकार चाहे किसी भी दल की हो, लेकिन भारतीय सेना की आवश्यकताओं पर होने वाले खर्च में कोई कटौती संभव न हो सके।

pandeyvp1960@gmail.com

मेलबाक्स

जागरूकता की आवश्यकता

दिल्ली में खतरनाक हो रहे प्रदूषण को लेकर समय-समय पर उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय तक सरकार को कड़ी फटकार लगा चुके हैं। बावजूद इसके प्रदूषण के स्तर में कोई सुधार नहीं हो पा रहा है। प्रदूषण की वजह से लोग गंभीर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। कुछ भी हो, लेकिन प्रदूषण पर नियंत्रण करना केवल सरकार का ही दायित्व और कर्तव्य नहीं है। आम नागरिक को भी इसके लिए जागरूक होना होगा। उन्हें भी अपने कर्तव्य का पालन करना होगा। तब कहीं जाकर प्रदूषण से निजात संभव है। अन्यथा आने वाले समय में इसकी भयावहता की कल्पना तक नहीं कर सकते।

vijaykumardhania@gmail.com

राजनीति से परे है देश की सुरक्षा

पुलवामा आतंकी हमले के बाद एयर स्ट्राइक को लेकर पक्ष-विपक्ष में जिस तरह से घमासान मचा है, वह प्रत्येक देशवासियों को आहत करने वाला है। देश की सुरक्षा मामलों पर किसी भी सियासी दल को राजनीति नहीं करनी चाहिए। यह मसला राजनीति से परे है। हमारे देश में उक्त मसले को लेकर जो हाहाकार मचा है उसे देखकर सहज ही कह सकते हैं कि हमें दुश्मनों की क्या जरूरत है? यह काम तो हमारे सत्ता के भूखे सियासी दल ही कर देंगे। पाकिस्तान भी मन ही मन खुश हो रहा होगा।

hemahariupadhyay@gmail.com

सुबूत मांगना दुर्भाग्यपूर्ण

वायुसेनाध्यक्ष बीएस धनोआ को अंततः राजनीतिक दलों के उन नेताओं को जवाब देना ही पड़ा, जो सेना के पराक्रम और शौर्य पर शक कर रहे हैं। वायुसेना प्रमुख ने साफ लहजे में कहा कि वायुसेना का काम लक्ष्य भेदना है न कि लाशों की गिनती करना। ऐसे राजनेताओं की संख्या में दिन-प्रतिदिन इजाफा होता जा रहा है, जो सेना के शौर्य का सुबूत मांग रहे हैं। इनमें कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के नेता मुख्य रूप से शामिल हैं। 2016 में उड़ी हमले के बाद भी इन्होंने सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक पर सुबूत की मांग की थी। यह देश का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि ऐसे नेता वातानुकूलित कमरे में बैठ, सेना की कार्रवाई पर सवाल उठाते हैं और पाकिस्तान के समाचारपत्रों और टीवी चैनलों पर प्रमुखता से स्थान पाते हैं।

नीरज कुमार पाठक, आइसीएआइ, नोएडा

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।